CLASS-12
SUBJECT- SECOND LANG. (HINDI)

POEM 5- नदी के द्वीप

- सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायायन 'अज्ञेय'

कवि परिचय: अज्ञेय जी का जन्म 7 मार्च 1911 को उत्तर प्रदेश के देवरिया जनपद के कसिया नामक ग्राम में हुआ था। यह बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे।'आंगन के पार द्वार, हरी घास पर क्षण भर, सुनहरे शैवाल, कितनी नावों में कितनी बार--आदि इनकी प्रसिद्ध काव्य रचनाएं हैं। सन 1978 में कितनी नावों में कितनी बार नामक काव्य रचना पर इन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार भी प्राप्त हुआ था। इनकी भाषा मुख्यत: संस्कृतनिष्ठ ही रही है।

कविता का सार : बहुमुखी प्रतिभा के धनी अज्ञेय जी द्वारा लिखित कविता 'नदी के द्वीप' एक दार्शनिक और चिंतन प्रधान रचना है। प्रस्तुत प्रतीकात्मक कविता में कवि ने व्यक्ति, परंपरा और समाज को महत्व दिया है। कवि समाज और व्यक्ति के संबंधों की खोज करते हैं। कवि ने यहां व्यक्ति को 'द्वीप', परंपराओं को 'नदी', समाज को 'भूखंड' से संबंधित किया है। यहां तीन मूल विषयों-- व्यक्ति समाज और परंपरा पारस्परिक संबंधों को एक मौलिक दृष्टि से देखा गया है।

अत: द्वीप व्यक्ति का प्रतीक है जिसका जन्म वंश परंपरा के मध्य हुआ है। हम सामाजिक जीव अर्थात समाज में रहने वाले व्यक्ति को समाज से जोड़ती है। वंश परंपरा (नदी) मां है जो हमारे रूप, आकार तथा व्यक्तित्व को सुघड़ बनाती है। अत: द्वीप को भूखंड से जोड़ने का काम नदी करती है, ठीक उसी प्रकार व्यक्ति को समाज से जोड़ने का काम वंश परंपरा करती है। वंश परंपरा हमारी मां है जो हजारों वर्षों से निरंतर बहती चली आ रही है। इसलिए कवि ने यह उल्लेख किया है कि----

" हम नहीं कहते कि हम को छोड़कर स्रोतस्विनी बह जाए"।

अर्थात वंश परंपरा हमारी मां है जो हजारों वर्षों से बहती चली आ रही है। यही कारण है कि कवि ने नदी को 'स्रोतस्विनी' कहा है। यहां व्यक्ति अर्थात द्वीप नदी के कारण ही समाज से अलग अपना अस्तित्व रखता है। वह बहना नहीं चाहता क्योंकि अगर एक बार वह बह गया तो अपनी पहचान खो देगा और इस धरती में रेत बनकर विलीन हो जाएगा। उसका वंश परंपरा में कोई स्थाई पहचान नहीं होगा और अपनी पहचान खोकर वह वंश परंपरा को गंदा बना देगा । इसलिए कवि के शब्दों में--

"हम बहेगे तो रहेंगे ही नहीं"। मतलब यह है कि अगर हम धारा के समान बहते ही रहेंगे तो समाज में व्यक्ति के रूप में हमारा कोई अस्तित्व ही नहीं रहेगा। हमारी पहचान ही मिट जाएगी। कवि ने बार-बार यह कहना चाहा है कि हम नदी के पुत्र हैं और उसी के गोद में बैठे हुए हैं, उसी के द्वारा हम समाज से जुड़ते हैं। नदी ही भूखंड से हमको मिलाती है, अत: भूखंड द्वीप का पिता है। मां संस्कार देती है पिता संरक्षण देता है।

"द्वीप हैं हम ! यह नहीं है शाप"-- हम द्वीप हैं इसका अर्थ यह नहीं कि यह हमारे लिए अभिशाप है क्योंकि किसी भी नदी का द्वीप होना ही हमारा भाग्य है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि 'नदी के द्वीप' कविता कवि की मानसिकता को अत्यंत सुंदर शब्दों में अभिव्यक्त करती है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें :

1) नदी द्वीप को भूखंड से अलग करने के साथ-साथ जोड़ती भी है। इस कथन की समीक्षा कीजिए।

2) निम्नलिखित पंक्तियों के आधार पर दिए गए प्रश्नों का उत्तर संक्षेप में दीजिए-

क) हम नदी के द्वीप हैं
हम नहीं कहते कि हमको छोड़कर स्त्रोतस्विनी बह
जाए।
वह हमें आकार देती है।
हमारे कोण; गलियां,अंतरीप, उभार,सैकत-कूल
सब गोलाइयां उसकी गड़ी हैं।

i) उपरोक्त पंक्तियों के कवि कौन हैं? उनका संक्षेप में परिचय दीजिए।
ii) अंतरीप किस प्रकार कहां बनते हैं?
III) परंपरा द्वारा क्या निर्माण होता है?
iv) कौन हमें आकार देती है? कैसे?

ख) वह वृहत भूखंड से हमको मिलाती है,
और वह भूखंड अपना पितर है।

i) प्रतीकात्मक कविता के आधार पर द्वीप किसका प्रतीक है? समझाइए।
ii) समाज और संस्कार के क्या मतलब हैं?
III) शब्दार्थ लिखिए - वृहत, पितर, भूखंड, नियति।
iv) किसके कारण द्वीप भूखंड से जुड़ता है? कैसे?